साभार: क्रॉसवर्ड बुकस्टोर

इतिहास में खुद की तलाश

दीपांजली काकाती

सादिया शेपर्ड कौतूहल से नीली मखमली डिब्बी में रखे छोटे से, गोल बैज को देख रही थीं जिस पर फ्लॉरेंस नाइटिंगेल की छवि उभरी थी और लिखा था ''अवार्डेड टु: रेचल जेकॅब्स।'' डिब्बी उसे नानी के कमरे में रखी अल्मारी से मिली थी।

सादिया ने अपनी नानी राहत सिद्दीकी से पूछा, ''नाना, रेचल जैकब्स कौन हैं?''

नानी का जवाब था, ''शादी से पहले मैं ही रेचल जैकॅब्स थी।'' और फिर उन्होंने अपनी 13 बरस की नातिन को जो कहानी सुनाई वह उसने तो क्या, घर भर में किसी ने नहीं सुनी थी। यह कहानी उस बेनी इज़राइल समुदाय की थी जो मानता है कि उनका जहाज 2000 बरस पहले दक्षिण पश्चिमी भारत में कोंकण के समुद्र तट के पास दुर्घटनाग्रस्त हो गया था और सात पुरुष और सात स्त्रियां किसी तरह तट पर आ लगे थे।

न्यू यॉर्क की रहने वाली डॉक्यूमेंटरी फ़िल्म निर्माता और लेखक सादिया शेपर्ड कहती हैं, ''... यह घटना मेरे अपने जीवन में एक उत्प्रेरक बनी। मैं अब तक यही जानती थी कि मैं दो संस्कृतियों की वारिस हूं- मेरे पिता ईसाई और मां मुस्लिम हैं। लेकिन अचानक पता चला कि मैं तो तीन-तीन संस्कृतियों की वारिस हूं- मेरी नानी यहूदी थीं।''

इस घटना की परिणति सादिया के 2001-03 तक भारत में रहकर बेनी इज़राइल समुदाय का दस्तावेज़ीकरण करने में हुई। पहले तो वह एक बरस की फुलब्राइट अध्ययनवृत्ति पर फिल्म एंड टेलिविज़न इंस्टिट्यूट ऑफ़ इंडिया, पुणे में काम करती रहीं। फिर न्यू यॉर्क की जेरेमिया काप्लान फाउंडेशन के अनुदान से शोध में जुटीं। इन दो बरसों में उन्होंने बेनी इज़राइल समुदाय के इतिहास को फोटो और फिल्म पर दर्ज किया।

इस बरस अप्रैल में सादिया अपनी किताब *द गर्ल फ़्रॉम फॉरेन: ए सर्च फ़ॉर शिपरैक्ड एनसेस्टर्स, फ़ॉरगॉटन हिस्टरीज़, एंड ए सेंस ऑफ़ होम* के विमोचन और अपनी डॉक्यूमेंटरी फिल्म *इन सर्च ऑफ़ द बेनी इज़राइल* के प्रदर्शन के सिलसिले में फिर भारत लौटीं।

वह कहती हैं, ''जब आप बच्चे होते हैं तो ज़रूरी नहीं कि अपने जीवन में इतिहास का महत्व और अपने ही परिवार के इतिहास की भूमिका को जानें। मेरे जीवन में कई दौर गुजरे हैं जब मैं अपने परिवार के इतिहास के बारे में कमोबेश रुचि रखती थी।''

मुंबई में क्रॉसवर्ड बुकस्टोर में पुस्तक चर्चा के दौरान सादिया शेपर्ड।

समय गुज़रने के साथ-साथ सादिया अपनी नानी से उनके अतीत के बारे में और अधिक प्रश्न पूछने लगीं, ''मैं उनको परेशान किए रहती कि और बताओ, और फिर क्या हुआ... वह किस्से बताती चली गईं और उनकी बिरादरी के बारे में मेरी जानकारियां बढ़ती चली गईं।'' वह बताती हैं, ''मैं नानी की बिरादरी के बारे में पूरी जानकारी चाहती थी। नानी से उनके किस्से सुनने ने मेरे जीवन को मौजूदा राह पर ढाल दिया...।''

सादिया मैसाच्यूसेट्स में भारत और पाकिस्तान के किस्से सुनती-गुनती पली-बढ़ीं। उनके घर में क्रिसमस, रमज़ान और ईद के पर्व मनाए जाते थे। उनकी मां समीना कुरैशी 1961 में अमेरिकन फील्ड सर्विस के आदान-प्रदान कार्यक्रम के तहत अमेरिका आईं जहां उन्होंने कैन्सस में हाई-स्कूल के आखिरी वर्ष की पढ़ाई की। आगे की पढ़ाई के लिए वह अमेरिका में ही रुक गईं। फिर कनेटिकट में येल यूनिवर्सिटी में पढ़ते वक्त उनकी मुलाकात रिचर्ड शेपर्ड से हुई। वर्ष 1973 में यह मुलाकात शादी में बदल गई।

समीना की मां राहत सिद्दीकी मुंबई में बेनी इज़राइल समुदाय में जन्मी थीं। 1930 के दशक में वह अली सिद्दीकी की तीसरी पत्नी बनीं और भारत विभाजन के बाद अपने पति और बच्चों के साथ पाकिस्तान चली गईं। 1975 में जब सादिया का जन्म हुआ तो उसके पालन-पोषण में मदद के लिए राहत अमेरिका चली आईं।

वर्ष 2000 में अपनी मृत्यु से पहले राहत ने अपनी नातिन से वचन ले लिया था कि वह भारत जाकर बेनी इज़राइल समुदाय और खुद अपने जीवन में विभिन्न धर्मों के संगम की भूमिका के बारे में अपनी जानकारी बढ़ाएगी।

सितंबर 2001 में सादिया अमेरिका पर आतंकी हमले से ठीक तीन दिन पहले भारत पहुंचीं। उनके पास पांच कैमरे, अपनी नानी और पिता के परिवारों के नामों की एक छोटी सी सूची और कुछ धुंधलाती, सीपिया तस्वीरें थीं। *द गर्ल फ्रॉम फ़ॉरेन* में वह लिखती हैं, ''मैं एक शौकिया जासूस की तरह उस खास यात्रा पर भारत आई हूं- अपने वंशवृक्ष की जड़ों की तलाश। यह विपरीत आव्रजन है- मैं उस देश में लौटी हूं जिसने मेरी नानी और मां को पोषण दिया, मैं उनके नक्शे के अंदर अपना नक्शा बनाने आई हूं।''

मुंबई और कोंकण में बेनी इज़राइल समुदाय का दस्तावेज़ीकरण करते सादिया यह देखकर चकित रह गईं कि कितनी कहानियां, भाग्य की कितनी करवटें उनके सामने आ रही थीं। उन्होंने मुंबई और कोंकण के रंग, गंध, ध्वनियां, दृश्यों का जीवंत चित्र खींचा है, ''मैं रोज़ अपनी डायरी में दिनभर के विवरण दर्ज़ करती। डायरियां तेजी से भरने लगीं - एक से दो, फिर छह, फिर दस और दो बरस में तो आधा सूटकेस डायरियों से भर गया।''

फोटो: सादिया शेपर्ड

सादिया शेपर्ड ने फोटोग्राफों और डॉक्यूमेंट्री फ़िल्म के जरिये बेनी इज़राइल समुदाय के इतिहास को रिकॉर्ड करने का काम किया है।

ज़्यादा जानकारी के लिए:

सादिया शेपर्ड

www.sadiashepard.com

सादिया शेपर्ड और भारत के गुम हुए यहूदी

http://www.youtube.com/watch?v=6-csNXvLXcQ

अमेरिका-भारत शैक्षिक प्रतिष्ठान

http://www.usief.org.in/

वर्ष 2003 में अमेरिका लौटकर अमेरिकी जीवन की फिर से अभ्यस्त होते सादिया ने ''जो देखा, जो अनुभव किया था, उसका जो प्रभाव मेरे जीवन पर पड़ा था'' उसे समझने की प्रक्रिया में डायरियां फिर से पढ़ीं। यह पुनर्पाठ ही *द गर्ल फ्रॉम फ़ॉरेन* का आधार है।

अप्रैल में अपनी भारत यात्रा के बारे में सादिया कहती हैं, ''यहां लौट कर इस किताब को प्रेरित करने वाले लोगों और जगहों से फिर से मिलना बहुत रोमांचक है। मुम्बई, चेन्नई, नई दिल्ली में हर जगह लोग जानना चाहते थे कि कई धर्मों के प्रभाव वाले घर में पलना-बढ़ना कैसा था, उस ने कैसे मेरी अस्मिता को आकार दिया।''

वह स्वीकार करती हैं कि कई धर्मों के प्रभावों के बीच पलना ''एक दुविधाभरा रास्ता तो है लेकिन इसमें संवाद की बहुत गुंजाइश रहती है। यह संवाद के लिए बहुत संसाधन उपलब्ध करवाता है।''

शेपर्ड कहती हैं कि उनके परिवार में लोग अक्सर एक दूसरे से असहमत होते हैं, ''मेरे इज़राइली और पाकिस्तानी कुटुम्बियों के राजनीतिक या धार्मिक विचार एक दूसरे से बिल्कुल नहीं मिलते लेकिन फिर भी वे सभी एक साझे सुयोग से जुड़े हैं। ''मेरी नानी मेरे नाना से प्रेम करती थीं। तो हमें एक दूसरे से संवाद का उपाय ढूंढना ही पड़ा।''

स्टैनफ़र्ड यूनिवर्सिटी से डॉक्यूमेंटरी फिल्म प्रोग्राम की ग्रेजुएट शेपर्ड 2009 में यूटा के सनडान्स फिल्म फ़ेस्टिवल में सिनेमाटोग्राफी का पुरस्कार पाने वाली फिल्म *द सेप्टेम्बर इश्यू* की निर्माताओं में से एक हैं। फिल्म अमेरिकी पत्रिका *वोग* के सितम्बर के अंक और उसकी सम्पादक एन्ना विनटूअर के बारे में हैं। सादिया बताती हैं, ''*वोग* पत्रिका का सितम्बर अंक एक टेलिफोन डायरेक्टरी के बराबर होता है... हमने जनवरी में इसकी योजना बनने से लेकर सितंबर में अंक के बाज़ार में आने तक की पूरी प्रक्रिया पर ध्यान दिया।''

सादिया कहती हैं कि वह भारत पर एक और किताब लिखना चाहेंगीं, ''दक्षिण एशिया में किस्से सुनाने की परंपरा प्रबल है और मुझे उसी परंपरा की दिशा में चलने पर गर्व है। मैं यहां अभी कुछ और काम करना चाहती हूं।''